Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college
Darbhanga

राष्ट्रीय आय लेखा NATIONAL INCOME ACCOUNTS

सामान्यतया एक वर्ष के अंदर उत्पन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को राष्ट्रीय आय कहते हैं अर्थशास्त्र में इसके अन्तर्गत समग्र मूल्यों जैसे समग्र उत्पादन, समग्र आय व समग्र रोजगार आदि का अध्ययन किया जाता है अर्थशास्त्र में आय से संबंधित लेखों अर्थात राष्ट्रीय आय लेखा तथा उन लेखों को तैयार करने की विधि अर्थात राष्ट्रीय लेखांकन विधि का अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जाता है।

जिस प्रकार प्रत्येक देश अपनी राष्ट्रीय आय से संबंधित आंकड़ों का हिसाब किताब रखता है उसे राष्ट्रीय आय लेखा कहा जाता है जिस प्रकार एक फर्म अपनी व्यवसायिक स्थिति की जानकारी के लिए लेखा रखता है ठीक उसी प्रकार सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थिति की जानकारी के लिए आर्थिक लेखांकन की आवश्यकता होती है किसी राष्ट्र के आर्थिक लेखांकन को ही राष्ट्रीय आय लेखांकन या सामाजिक लेखांकन कहते हैं राष्ट्रीय आय लेखांकन एक व्यवसाय लेखा के समान ही दोहरी अंकन पद्धति के आधार पर तैयार किया जाता है राष्ट्रीय आय के विभिन्न स्रोत जैसे उत्पादन, वितरण, उपभोग आदि से संबंधित आंकड़ों के व्यवस्थित लेखे अथवा विवरण को राष्ट्रीय आय लेखा कहा जाता है।

उदाहरण स्वरूप भारत की राष्ट्रीय आय के कृषि, उद्योग, निर्माण सेवाओं यातायात बैंकिंग आदि क्षेत्रों में होने वाले उत्पादन से संबंधित आंकड़ों तथा राष्ट्रीय आय के निजी उद्योग, निवेश, सरकारी व्यय, शुद्ध निर्यात आदि के रूप में कीए गए व्यय से संबंधित आंकड़ों के विवरण को राष्ट्रीय आय लेखा कहा जाता है भारत में इन्हे राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी भी कहा जाता है।

राष्ट्रीय आय के आंकड़ों से इस बात की जानकारी नहीं हो पाती है कि कुल राष्ट्रीय उत्पादन का कितना भाग उपभोग किया जाता है कितना भाग बचाया जाता है कितना भाग विनियोग किया जाता है अर्थव्यवस्था की एक विस्तृत जानकारी हेतु राष्ट्रीय लेखांकन का एक नयी रीति का प्रतिपादन किया गया है जिसे सामाजिक लेखांकन अथवा राष्ट्रीय लेखांकन कहते हैं। राष्ट्रीय आय लेखांकन एक ऐसा सांख्यिकी लेखा जोखा है जिसमे किसी देश के आय, उत्पादन सामाजिक व राजनीतिक अंकगणित को इस ढंग से व्यक्त करते हैं कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्सम्बंध सहज ही स्पष्ट हो जाता है।

राष्ट्रीय लेखांकन की इस पद्धति से अर्थव्यवस्था की आर्थिक इकाईयों और क्षेत्रों के आंकड़ों को मैट्रिक्स के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिससे पारस्परिक संबंधों को समझने में मदद मिलती है। इसमें आर्थिक और वित्तीय क्रियाओं का प्रवाह क्रिया का अध्ययन किया जाता है। अन्तर्प्रवाह के रूप में यह साधन सेवाओं के उत्पादन प्रक्रियाओं में योगदान का अध्ययन किया जाता है। तथा आय के विपरीत प्रवाह या उत्प्रवाह के रूप में यह वर्णन करता है कि किस प्रकार आय उत्पादकों से मजदूरी, ब्याज लगान और लाभ के रूप में साधनों तक पहुँचती है। अन्य शब्दों में राष्ट्रीय लेखांकन एक ओर आर्थिक क्रियाओं के स्तर को मापता है तो दूसरी ओर विभिन्न आर्थिक क्रियाओं (उत्पादन, उपभोग और निवेश) के अन्तर्संबंध को स्पष्ट करता है।

राष्ट्रीय आय लेखांकन की परिभाषा कुछ अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी है,

Scanned by CamScanner

जो निम्नलिखित है।

1 प्रो. जोन के अनुसार " राष्ट्रीय आय लेखांकन वह विधि है जिसके द्वारा सामूहिक आर्थिक क्रियाओं को समग्र रूप में मापा जाता है। "

2. पाल स्टूडेंस्की के अनुसार " राष्ट्रीय आय लेखा विश्लेषण अर्थव्यवस्था के जटिल वित्तीय व्यवहारों की प्रकृति मात्रा और अन्तर्संबंधों को निर्धारित करने की एक विधि है। "

इस प्रकार राष्ट्रीय आय लेखांकन सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की आर्थिक क्रियाओं का सांख्यिकी विवरण प्रस्तुत करता है और इसके आपसी संबंधों को सूचित करता है। तथा विश्लेषण के लिए ढाँचा प्रदान करता है।

इन परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्रीय आय लेखांकन कुछ विशेषताएँ हैं। जो निम्न हैं।

1. सौदों का विभाजन — राष्ट्रीय आय लेखे में केवल उत्पादक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। उत्पादक क्रियाओं के चार क्षेत्रों जैसे उत्पादन क्षेत्र, परिवार क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व क्षेत्र में बाँटा जाता है।

2. दोहरी अंकन विधि — विभिन्न क्षेत्रों के लिए दोहरी अंकन विधि के आधार पर लेखे तैयार किए जाते हैं।

3. लेखा संबंधों की स्थापना — लेखों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों के बीच लेखा संबंधों की स्थापना की जाती है।

4. परस्पर संबंधों का विश्लेषण — विभिन्न क्षेत्रों में उनके कार्यों के आधार पर जो परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है उसका विश्लेषण किया जाता है।

अन्य विशेषताएँ

1. यह पारस्परिक संबंधों और प्रवाहों को स्पष्ट करते हुए अर्थव्यवस्था के एक विश्लेषण का ढाँचा प्रदान करता है।

2. राष्ट्रीय आय लेखा विश्लेषण अर्थव्यवस्था के जटिल वित्तीय व्यवहारों की प्रकृति मात्रा और अंत: संबंधों को निर्धारित करने की एक विधि है।

3. इसमें केवल उन्हीं गतिविधियों का समावेश किया जाता है जिसका संबंध संबंधित वर्ष की वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह से है।

इन विशेषताओं के आधार पर राष्ट्रीय आय एवं राष्ट्रीय आय लेखा में अंतर है।

1 राष्ट्रीय आय एक वर्ष के दौरान एक देश में कुल अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के मौद्रिक मूल्य का माप है जबकि राष्ट्रीय आय लेखा राष्ट्रीय आय के बारे में सांख्यिकीय कथन और तालिकाएँ हैं।

2. राष्ट्रीय आय एक देश की समृद्धि का सूचक है जबकि राष्ट्रीय आय लेखा विभिन्न क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था के कार्य निष्पादन को बताता है।

3. राष्ट्रीय आय एक अर्थव्यवस्था की वर्तमान उपलब्धि को मापती है यह विभिन्न क्षेत्रों के मूल संबंधों की उपेक्षा कर देती है जबकि राष्ट्रीय आय लेखा एक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच पाए जाने वाले अन्तर्संबंधों को बताते हैं। और उनका विश्लेषण करते हैं।

राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्व

राष्ट्रीय आय लेखांकन किसी देश की अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति प्रतिबिम्बित करता है तथा देश की आर्थिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए विश्लेषण का प्रारूप प्रस्तुत करता है इस तरह से राष्ट्रीय आय लेखांकन या सामाजिक लेखांकन का महत्व निम्नांकित है।

1. लेन-देन के वर्गीकरण में महत्व — किसी देश की आर्थिक क्रिया में असंख्य लेन-देन पाए जाते हैं। जो क्रय-विक्रय से आय का भुगतान तथा प्राप्ति से, निर्यात-आयात से, करों के भुगतान आदि से संबंध रखते हैं। सामाजिक लेखांकन का विशेष लाभ

Scanned by CamScanner

यह है कि यह विभिन्न प्रकार लेन-देनों का उचित वर्गीकरण कर इनका प्रस्तुतीकरण सारणीयित कर देता है और इसके राष्ट्रीय आय, व्यय, बचत, विनियोग, उपभोग व्यय, उत्पादन व्यय और सरकारी व्यय विदेशी के भुगतान एवं प्राप्तियों आदि के संबंध में पृथक-पृथक जानकारी प्राप्त हो जाती है।

2. आर्थिक संरचना के समझने में महत्व — सामाजिक लेखांकन हमें आर्थिक संरचना को समझाने में सहायता पहुँचाता है। यह हमें न केवल राष्ट्रीय आय का ज्ञान कराता है अपितु उत्पादन एवं उपभोग के आकार, धारावाहन एवं बचत के स्तर तथा विदेशी व्यापार पर अर्थव्यवस्था की निर्भरता के बारे में भी जानकारी देता है।

3. विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्संबंध की जानकारी — इस विधि के द्वारा अन्तर्संबंध की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तथा इसका तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है ये लेखे उत्पादन क्षेत्र, वित्तीय क्षेत्र तथा शेष विश्व के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सापेक्षिक योगदान संबंधी मूल्यांकन में भी सहायता प्रदान करते हैं।

4. तुलनात्मक अध्ययन — सामाजिक लेखांकन के द्वारा विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। तथा भविष्य में उनकी आर्थिक स्थिति में घटित होने वाली परिवर्तनों का अनुमान भी लगाया जा सकता है। अर्थव्यवस्था की प्रगति या अवनति सामाजिक लेखांकन में दिखायी देती है।

5. श्रम संघों के लिए महत्व — श्रम संघों तथा श्रमिक संगठनों के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन का विशेष महत्व है इस लेखा से उनको इस बारे में जानकारी मिलती है कि राष्ट्रीय आय के सृजन में श्रमिकों का क्या योगदान है। तथा श्रमिकों और कर्मचारियों को वेतन तथा पारिश्रमिक के रूप में राष्ट्रीय आय का कितना हिस्सा मिल रहा है।

6. आर्थिक विकास का माप — राष्ट्रीय आय सांख्यिकी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के स्तर तथा आर्थिक कल्याण के स्तर के प्रतीक होते हैं। राष्ट्रीय आय लेखांकन एक समय अवधि में उत्पादन उपभोग तथा पूँजी निर्माण की उन्नति के निर्धारण में सहायक होते हैं। राष्ट्रीय आय लेखांकन दो भिन्न-भिन्न समयों पर अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं के स्तर को मापने और उसकी तुलना में सहायक होते हैं।

7. आर्थिक नियोजन में सहायक — राष्ट्रीय आय लेखांकन आर्थिक नियोजन के निर्माण में विशेष रूप से सहायक होता है इनके द्वारा योजना आयोग को यह ज्ञात होता है कि आर्थिक नियोजन के लिए कितने साधन उपलब्ध होंगे। विभिन्न क्षेत्रों में कौन-कौन से लक्ष्य निर्धारित किये जायें योजना का आकार कितना होना चाहिए। विकास की दर कितनी होनी चाहिए। कौन से क्षेत्र को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। संक्षेप में आर्थिक नियोजन की सफलता के लिए राष्ट्रीय आय लेखा का बहुत अधिक महत्व है।

8. आधारभूत आर्थिक क्रियाओं का रिकार्ड — राष्ट्रीय आय लेखों के द्वारा आँकड़ों का ऐसा ढाँचा प्राप्त होता है जिसकी सहायता से अर्थव्यवस्था की आधारभूत क्रियाओं अर्थात उत्पादन, उपभोग तथा पूँजी निर्माण से संबंधित रिकार्ड रखना संभव होता है।

9. आर्थिक विश्लेषण के लिए महत्व — अर्थशास्त्र के अध्ययन में भी राष्ट्रीय आय लेखा की अवधारणा का विशेष महत्व है विभिन्न समूहों और लेखाओं के बीच अन्तर्संबंधों का अध्ययन तथा एकरूपता स्थापित करने में राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्वपूर्ण स्थान है।

10 संरचनात्मक परिवर्तनों का ज्ञान — किसी अर्थव्यवस्था में होने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों का ज्ञान भी राष्ट्रीय आय सांख्यिकी के द्वारा होता है इससे अर्थव्यवस्था के विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों के सापेक्ष महत्व का पता चलता है। और इस बात की भी जानकारी मिलती है कि अर्थव्यवस्था में आय का वितरण व उपभोग का स्वरूप किस प्रकार का है। और लोगों के रहन-सहन का स्तर कैसा है।

इस प्रकार राष्ट्रीय आय या सामाजिक लेखांकन आर्थिक क्रियाओं का सूचक तथा आर्थिक नीति तथा नियोजन का एक उपयोगी उपकरण समझा जाता है सामाजिक लेखांकन राष्ट्र की आर्थिक नाड़ी पर ध्यान रखता है। तथा देश की आर्थिक स्वास्थ्य सुधारने की दृष्टि से विवेकपूर्ण आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहयोग प्रदान करता है। P.T.O

Scanned by CamScanner

सामाजिक लेखांकन की कठिनाइयाँ

सामाजिक लेखे तैयार करने में निम्न लिखित कठिनाइयाँ आती है

1. मापन की कठिनाई – जब सामाजिक लेखे तैयार किये जाते है तो सब प्रकार के आय तथा भुगतानों को मुद्रा के रूप में मापा जाता है परन्तु बहुत सी ऐसी वस्तुएँ एवं सेवाएँ है जिन्हें मुद्रा के रूप में आकलित करना कठिन है उदाहरण के लिए घर में गृहिणियों द्वारा अपने परिवार के लिए सेवाएँ, शिक्षक द्वारा अपने बच्चों को पढ़ाया जाना, किसान द्वारा अपने लिए खाद्यान्न रख लेना आदि अतः अनेक ऐसी सेवाएँ लेन-देन जो आर्थिक होती है परन्तु बाजार गत नहीं होती अर्थात जिनका मूल्य मुद्रा में आंका नहीं जा सकता, सही-सही सामाजिक लेखा तैयार करने में समस्याएँ प्रस्तुत करते है।

2. दोहरी गणना — सामाजिक लेखे तैयार करने में एक बड़ी कठिनाई दोहरी गणना की है जो इस लिए उत्पन्न होती है क्योंकि मध्यवर्ती वस्तुओं और अंतिम वस्तुओं में भेद सापेक्षिक होता है एक वस्तु मध्यवर्ती है या अंतिम उस वस्तु के प्रयोग पर निर्भर है। उदाहरण के लिए रेडिमेड शर्ट बनाने के कारखाने के लिए कपड़ा मध्यवर्ती वस्तु है परन्तु उपभोक्ता के लिए यह अंतिम वस्तु बन जाता है उसी प्रकार जिस आटे को बेकरी में उपभोग किया जाता है तो वह मध्यवर्ती वस्तु है। और जिस घर में प्रयोग किया जाता है वह अंतिम वस्तु है।

3. पूँजी ह्रास — पूँजीगत वस्तुओं के ह्रास को मौद्रिक रूप से अनुमानित कर उत्पादन में से इसे घटा दिया जाता है प्रश्न यह है कि पूँजी का ह्रास का अनुमान किस प्रकार लगाया जाय। उदाहरण के लिए कोई ऐसी पूँजी परिसम्पति है जिसकी प्रतिशत आयु 60 वर्ष है तो उसके चालू मूल्य ह्रास दर का हिसाब लगा सकना बहुत कठिन है साथ ही यदि परिसम्पतियों की कीमत में प्रत्येक वर्ष परिवर्तन होता है तो कठिनाई और भी बढ़ जाती है।

4. सार्वजनिक सेवाएँ — सामाजिक लेखों के एक और समस्या अनेक सार्वजनिक सेवाओं के आगणना की रहती है। ये सेवाएँ पुलिस, सेना, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि से संबंधित रहती है इसी प्रकार बहुदेशीय नदी घाटी परियोजना के योगदान को भी सामाजिक लेखों में सम्मिलित करना बहुत कठिन कार्य है क्योंकि इन परियोजनाओं से मिलने वाले विविध लाभों का मौद्रिक रूप से हिसाब लगाना कठिन कार्य है।

5. माल सूची समायोजन — सामाजिक लेखांकन के अन्तर्गत व्यवसाय लेखों में माल सूचियों का सही हिसाब लगाने के लिए माल सूची मूल्यांकन के समायोजन की जरूरत होती है जो कि बहुत ही कठिन काम है कारण यह है कि फर्में अपनी माल सूचियाँ अपनी मूल लागतों के हिसाब से दर्ज करती है उनकी प्रतिस्थापन लागतों के हिसाब से नहीं फलतः जब कीमते बढ़ती है तो सूचियों के अंतिम मूल्य में लाभ होता है जब कीमते गिरती है तो माल सूचियों के अंतिम मूल्य में हानि होती है। इस प्रकार माल सूचियों में होने वाले परिवर्तन का समायोजन करना कठिन कार्य है।

6. अपूर्ण लेखांकन — राष्ट्रीय आय लेखांकन में लेखों की अपूर्णता भी एक कठिनाई है क्योंकि इनके अर्थव्यवस्था की उचित जानकारी नहीं हो पाती ऐसे लेखों में पूँजी का हस्तांतरण पुराने सामान के पड़े क्रय विक्रय का भुगतान, विदेशी उपहार, सहायता एवं अनुदान आदि सम्मिलित हो।

7. अन्य कठिनाइयाँ — राष्ट्रीय आय लेखांकन की अन्य व्यवहारिक कठिनाइयों में सांख्यिकी आँकड़ों की विश्वसनीयता है क्योंकि सरकारी क्षेत्र परिवार क्षेत्र एवं उत्पादन क्षेत्र के जो आंकड़े उपलब्ध होते है विश्वसनीय नहीं होते है इसके अतिरिक्त लेखांकन में अंत संबंधों का विश्लेषण नहीं किया जाता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय लेखांकन एवं सामाजिक लेखांकन में बहुत अधिक व्यवहारिक कठिनाइयाँ है लेकिन इतनी कठिनाइयों के बावजूद भी राष्ट्रीय लेखांकन देश की आर्थिक स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ———

Scanned by CamScanner